वैदिक और लौकिक संस्कृत में अंतर

वैदिक और लौकिक संस्कृत-भाषाओं के शब्द-रूपों के आधार पर इनके मध्य कतिपय मौलिक अंतर हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. वैदिक संस्कृत में ᳵ क (जिह्वामूलीय:) और ᳶ प (उपध्मानीय:)-जैसी विशिष्ट ध्वनियाँ हैं, किंतु लौकिक संस्कृत में इन ध्वनि-समूहों का अभाव है।
2. वैदिक संस्कृत में स्वर 'ळृ' का प्रयोग है, लौकिक संस्कृत में यह लुप्तप्राय है।
3. वैदिक संस्कृत में उदात्त, अनुदात्त, स्वरित् इत्यादि का प्रयोग अनिवार्य रूप से होता है, किंतु लौकिक संस्कृत में स्वरांकन की यह प्रक्रिया नहीं है।
4. वैदिक संस्कृत में स्वरों का प्रयोग संगीतात्मक है, किंतु लौकिक संस्कृत में यह बलाघातात्मक है।
5. वैदिक संस्कृत में ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत नामक तीन स्वर प्रचलित हैं, लौकिक संस्कृत में प्लुत का प्रयोग न के बराबर होता है।
6. अकारांत पुँल्लिंग शब्दों का प्रथमा-बहुवचन रूप असस् और अस् दो प्रत्ययों के जोड़ने से बनता है। जैसे–ब्राह्मणास: तथा ब्राह्मणा:। लौकिक संस्कृत में केवल दूसरा रूप ब्राह्मणा: ही ग्राह्य है।
7. अकारांत शब्दों का तृतीया-बहुवचन रूप दो प्रकार का होता है–देवेभि: तथा देवै:। लौकिक संस्कृत में केवल दूसरा रूप देवै: ही ग्राह्य है।
8. अकारांत शब्दों का प्रथमा-द्विवचन 'आ' प्रत्यय के योग से और इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों का तृतीया-एकवचन 'ई' प्रत्यय के योग से बनता है, जैसे–अश्विना (अश्विनौ), सुष्टुती (सुष्टुत्या)।
9. वैदिक संस्कृत में अनेक जगहों में सप्तमी-एकवचन लुप्त हो जाता है, जैसे–परमे व्योमन्। लौकिक संस्कृत है–व्योम्नि या व्योमनि।
10. वैदिक संस्कृत में अकारांत नपुंसक शब्दों का बहुवचन 'आ' तथा 'आनि' दो प्रत्ययों के योग से बनता है, जैसे–'विश्वानि अद्भुता'। लौकिक संस्कृत में अद्भुतानि होता है।
11. वैदिक संस्कृत के क्रियापदों में उत्तमपुरुष-बहुवचन (वर्तमान काल) 'मसि' प्रत्यय के योग से बनता है। मिनीमसि द्यवि द्यवि। लौकिक संस्कृत में 'मिनीम:' होता है।
12. वैदिक भाषा में आज्ञा तथा संभावना दिखाने के लिए लेट्लकार का प्रयोग होता है, लौकिक संस्कृत में इसका प्रयोग नहीं है। जैसे–प्रण आयूंषि तारिषत्। (हे वरुण! हमारी उम्र को बढ़ाओ।) यहाँ 'तारिषत्' लेट्लकार है। लौकिक भाषा में इसकी जगह पर 'तारय' कहेंगे।
13. वैदिक संस्कृत के 'लोट्लकार' (अनुज्ञा) मध्यमपुरुष-बहुवचन के प्रत्यय हैं–त, तन, थन, तात्। जैसे–शृणोत, सुनोतन, यतिष्ठन्, कृणुतात्। लौकिक संस्कृत में अ, तम्, त लगता है। जैसे–पठ, पठतम्, पठत।

14. वैदिक संस्कृत में लिट्-लकार का प्रयोग वर्तमानकाल में होता है, किंतु लौकिक संस्कृत में इसका प्रयोग परोक्ष भूतकाल में होता है।
15. वैदिक संस्कृत में संधि-नियम इच्छानुसार है। लौकिक संस्कृत में यह अनिवार्य है।
16. वैदिक संस्कृत में उपसर्गों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में भी प्रचलित है। लौकिक संस्कृत में उपसर्गों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं होता है।
17. वैदिक संस्कृत में ईम्, सीम्, वै इत्यादि निपात हैं, किंतु लौकिक संस्कृत में इन निपातों के प्रयोग नहीं मिलते।
18. वैदिक संस्कृत में छंद की पूर्ति के लिए स्वर-भक्ति का प्रयोग विहित है, जैसे–पृथ्वी-पृथिवी, स्वर-सुपर, दर्शन-दरशन इत्यादि। लौकिक संस्कृत में स्वर-भक्ति का प्रयोग नहीं होता।
19. लौकिक संस्कृत में निमित्तार्थक (के लिए) क्रिया के लिए 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग होता है, जैसे–गन्तुम् (जाने के लिए), कर्तुम् (करने के लिए), पातुम् (पीने के लिए), वक्तुम् (बोलने के लिए) इत्यादि, परंतु वेद में इस अर्थ के 8–10 प्रत्यय हैं। जैसे–से, असे, कसे, वध्यै, शध्यै इत्यादि। जैसे–जीवसे, (जीवितुम्) पिबध्यै (पातुम्), दातवै (दातुम्), कर्तवे (कर्तुम्)।
20. वैदिक संस्कृत में षष्ठी-विभक्ति के स्थान पर चतुर्थी-विभक्ति और चतुर्थी-विभक्ति के स्थान पर षष्ठी-विभक्ति हो सकती है, किंतु लौकिक संस्कृत में ऐसा नहीं हो सकता है।